बुनियादी स्तर की शिक्षा के उभरते आयाम

अलका*

प्रिया जौहरी**

विद्यार्थी के विकास में बुनियादी स्तर की शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण है। शैक्षिक विकास की दृष्टि से शिक्षा के आरंभिक वर्ष सबसे महत्वपूर्ण समय है, क्योंकि इस अवधि में बच्चे सीखने के प्रति जिज्ञासु एवं आकर्षित होते हैं। गुणवत्तापूर्ण बुनियादी स्तर की शिक्षा प्रत्येक बच्चे की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। बुनियादी स्तर पर बच्चे जो कुछ भी सीखते हैं, वही उनके भावी अधिगम का आधार होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रत्येक बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति, पहचान तथा विकास के लिए प्रयास करने को सिद्धांत के रूप में स्वीकार किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बुनियादी स्तर की शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। वर्तमान समय में, इस नीति के प्रावधानों को ध्यान में रखते हुए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए जा रहे हैं, जिससे सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण बुनियादी साक्षरता के साथ-साथ उचित संख्या ज्ञान तथा अक्षर ज्ञान मिल सके। इस लेख में बुनियादी स्तर की शिक्षा के कई नवीन आयामों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2022 के आलोक में समझाने का प्रयास किया गया है। साथ ही, लेख में बुनियादी स्तर की शिक्षा के विकास के लिए किए जा रहे प्रयासों पर चर्चा के साथ-साथ कुछ सुझाव भी दिए गए हैं।

गुणवत्तापूर्ण बुनियादी स्तर की शिक्षा किसी राष्ट्र की शैक्षिक प्रणाली की प्रभावशीलता का संकेतक है। बच्चों की प्रारंभिक वर्षों की गुणवत्तापूर्ण बुनियाद उनके जीवन को मज़बूत आधार प्रदान करती है। बुनियादी स्तर की शिक्षा एक बच्चे की आगामी शिक्षा एवं जीवनपर्यंत सीखते रहने का आधार है। उचित समझ के साथ पढ़ने, लिखने, सुनने तथा बोलने जैसे कौशलों के बिना कोई भी विद्यार्थी जटिल विषयवस्तु को नहीं समझ सकता है। कई शोधों से ज्ञात होता है कि गुणवत्तापूर्ण बुनियादी स्तर की शिक्षा ड्रॉपआउट (शिक्षा को पूरा किए बिना विद्यालय छोड़ देना) एवं पुनरावृत्ति (एक ही कक्षा में दो या तीन वर्ष तक पढ़ना) की संभावना को कम करने में सहायता करती है। इसके साथ ही शिक्षा के सभी स्तरों पर अधिगम के प्रतिफलों में सुधार भी करती है। यदि कोई बच्चा एक साधारण पाठ को पढ़ एवं समझ नहीं सकता है, तो उसे अधिगम में कठिनाई अनुभव हो सकती है। परिणामस्वरूप, वह

* *कनिष्ठ अनुसंधान अध्येता*, अध्यापक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली 110016

** *कनिष्ठ अनुसंधान अध्येता*, अध्यापक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली 110016

जिस कक्षा में अध्ययन कर रहा होता है, उसमें उत्तीर्ण नहीं हो पाता है। स्पष्ट है कि यदि बच्चों को उचित रूप से बुनियादी शिक्षा न मिले तो उसका नकारात्मक प्रभाव उसके शैक्षिक प्रतिफलों पर पड़ता है। इसलिए सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण बुनियादी स्तर की शिक्षा उपलब्ध कराना महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह शिक्षा स्वयं, समाज तथा राष्ट्र की उन्नति में सहायक होती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बुनियादी स्तर की शिक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शुरुआती वर्षों में सीखने को महत्वपूर्ण मानती है। इन वर्षों में शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जो बच्चों की मूलभूत क्षमताओं तथा कौशलों के विकास के लिए महत्वपूर्ण हो। इस नीति में 5+3+3+4 पाठ्यचर्यात्मक एवं शिक्षणशास्त्रीय शैक्षिक संरचना की परिकल्पना की गई है। इसमें आरंभ के पाँच वर्ष तक की शिक्षा को बुनियादी स्तर की शिक्षा के रूप में परिकल्पित किया गया है। साथ ही, यह भी कहा गया है कि विद्यालयी शिक्षा प्रणाली के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता 2026–27 तक प्राथमिक स्तर पर बुनियादी साक्षरता तथा संख्या ज्ञान कौशल का लक्ष्य प्राप्त करना है। यह नीति इस बात पर भी प्रकाश डालती है कि वर्तमान समय में प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के एक बड़े हिस्से ने बुनियादी स्तर की शिक्षा में साक्षरता तथा संख्या ज्ञान प्राप्त नहीं किया है। इस संकट का तुरंत समाधान करना अनिवार्य है। प्राथमिक विद्यालयों में अधिक संख्या में ऐसे विद्यार्थी हैं, जिन्होंने बुनियादी साक्षरता तथा संख्या ज्ञान नहीं सीखा है। ऐसे विद्यार्थियों में सामान्य लेख को पढ़ने, समझने तथा अंकों के साथ बुनियादी जोड़ एवं घटाव करने की क्षमता भी नहीं है। इनकी अनुमानित संख्या 5 करोड़ से भी अधिक है। इस नीति में बच्चों को प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) में निवेश पर अधिक ज़ोर दिया गया है, ताकि बुनियादी स्तर की शिक्षा सभी के लिए सहज तथा सुलभ बनाई जा सके।

बुनियादी स्तर की शिक्षा की वर्तमान स्थिति

सितंबर 2022 में यूनिसेफ़ के सहयोग से शिक्षा मंत्रालय एवं राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली द्वारा *फाउंडेशनल लर्निंग स्टडी— नेशनल रिपोर्ट ऑन बेंचमार्किंग फ़ॉर ओरल रीडिंग फ्लूअन्सी विद रीडिंग कॉम्प्रीहेंशन एंड न्यूमेरेसी* पर शोध अध्ययन किया गया था। यह शोध अध्ययन देश में बुनियादी शिक्षा के स्तर पर बुनियादी साक्षरता तथा संख्या ज्ञान की वर्तमान स्थिति को उजागर करता है। इस अध्ययन में देश के 10,000 विद्यालयों में 20 विभिन्न भाषाओं में ग्रेड 3 के 86,000 से अधिक विद्यार्थियों के सीखने का आकलन किया गया था। विभिन्न बुनियादी साक्षरता कौशलों का अध्ययन करने के लिए इस अध्ययन में कई पक्षों, जैसे— ध्वन्यात्मक जागरूकता, डीकोडिंग, मौखिक भाषा की समझ, पढ़ने की समझ एवं समझ के साथ मौखिक पठन प्रवाह आदि को शामिल किया गया था। इसी तरह, बुनियादी संख्या ज्ञान के अंतर्गत कई पक्षों का आकलन किया गया, जैसे— संख्या संचालन, संख्या की पहचान तथा तुलना, अंश, गुणा एवं भाग, तथ्य, पैटर्न, माप एवं डेटा संचालन इत्यादि। इस अध्ययन में अधिगमकर्ताओं का वर्गीकरण तीन प्रकार की प्रवीणताओं के आधार पर किया गया है, जो अग्रलिखित है—

- **आंशिक रूप से वैश्विक न्यूनतम प्रवीणता से कम**— ऐसे अधिगमकर्ता जो बुनियादी ज्ञान एवं कौशल को नहीं जानते हैं। इसके कारण वे बुनियादी कक्षा कार्य (बेसिक ग्रेड के टास्क) को पूरा नहीं कर पाते हैं।
- **आंशिक रूप से वैश्विक न्यूनतम प्रवीणता**— ऐसे अधिगमकर्ता जो सीमित ज्ञान एवं कौशल रखते हैं। वे आंशिक रूप से बुनियादी कक्षा कार्य (बेसिक ग्रेड के टास्क) को पूरा कर पाते हैं।
- **वैश्विक न्यूनतम प्रवीणता**— ऐसे अधिगमकर्ता जो पर्याप्त बुनियादी ज्ञान एवं कौशल जानते हैं। वे बुनियादी कक्षा कार्य (बेसिक ग्रेड के टास्क) को सफलतापूर्वक पूरा कर पाते हैं।

इस शोध अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि अध्ययन में शामिल किए गए विद्यार्थियों में से केवल 21 प्रतिशत विद्यार्थी वैश्विक न्यूनतम प्रवीणता स्तर को, 43 प्रतिशत विद्यार्थी आंशिक रूप से वैश्विक न्यूनतम प्रवीणता स्तर को तथा 21 प्रतिशत विद्यार्थी आंशिक रूप से वैश्विक न्यूनतम प्रवीणता से कम स्तर को पूरा करते हैं। अगर इस सर्वेक्षण का आकलन बालक और बालिकाओं के संदर्भ में करते हैं, तो आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि केवल 20 प्रतिशत बालिकाएँ आंशिक रूप से वैश्विक न्यूनतम प्रवीणता से कम, 43 प्रतिशत बालिकाएँ आंशिक रूप से वैश्विक न्यूनतम प्रवीणता स्तर को, 22 प्रतिशत बालिकाएँ वैश्विक न्यूनतम प्रवीणता को पूरा करती हैं। जबकि केवल 22 प्रतिशत बालक आंशिक रूप से वैश्विक न्यूनतम प्रवीणता से कम स्तर को, 43 प्रतिशत बालक आंशिक रूप से वैश्विक न्यूनतम प्रवीणता स्तर को तथा 19 प्रतिशत बालक वैश्विक न्यूनतम प्रवीणता को पूरा करते हैं। अतः इस शोध अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट होता है कि अधिकांश विद्यार्थी वैश्विक न्यूनतम प्रवीणता को आंशिक रूप से पूरा करने की श्रेणी में आते हैं।

आरेख 1

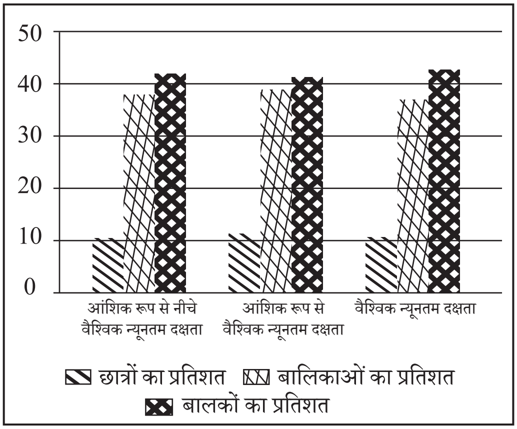

स्रोत— फाउंडेशन लर्निंग स्टडी 2022 नेशनल रिपोर्ट ऑन बेंचमार्किंग फ़ॉर ओरल रीडिंग फ्लूअन्सी विद रीडिंग कॉम्प्रीहेंशन एंड न्यूमेरेसी

बुनियादी स्तर की शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लक्ष्यों तथा सिद्धांतों के अनुरूप बुनियादी स्तर की शिक्षा में शिक्षा, प्रशिक्षण तथा अधिगम को निर्धारित करने के लिए *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022* को राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा विकसित किया गया है। यह रूपरेखा 'पंचकोशीय' अवधारणा— अन्यमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश एवं आनंदमय कोश पर केंद्रित है। पंचकोश की अवधारणा में शारीरिक विकास, प्राणमय विकास (जीवन ऊर्जा का विकास), भावनात्मक एवं मानसिक विकास, बौद्धिक विकास

तथा चेतना संबंध एवं आध्यात्मिक विकास के तत्त्व शामिल हैं। पंचकोश के प्रत्येक स्तर में विशिष्ट गुण, कौशल एवं दक्षताएँ समाहित हैं। इस पाठ्यचर्या के अनुसार बच्चे का समग्र विकास इन पाँचों तत्वों के पोषण से जुड़ा हुआ होना चाहिए क्योंकि बुनियादी स्तर की शिक्षा का उद्देश्य बच्चों का सर्वांगीण विकास करना है। इसके साथ ही, प्रारंभिक शिक्षा, जीवन भर सीखने की नींव है। इसलिए प्रारंभिक भाषा, साक्षरता तथा संख्यात्मक ज्ञान के विकास में अधिकतम प्रतिफलों को प्राप्त करना है।

इस पाठ्यचर्या का मानना है कि बच्चे के जीवन के पहले आठ वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं तथा उसके समग्र विकास की नींव रखते हैं। वास्तव में, इन वर्षों में मस्तिष्क का विकास अधिक तीव्र होता है। तंत्रिका विज्ञान के शोध दर्शाते हैं कि किसी व्यक्ति के मस्तिष्क का 85 प्रतिशत से अधिक विकास छह वर्ष की उम्र तक हो जाता है। वर्तमान समय में, विद्यालयों में अधिकतर बच्चे प्राथमिक शिक्षा के लिए नामांकित हैं, लेकिन फिर भी वे बुनियादी साक्षरता तथा संख्या ज्ञान जैसे बुनियादी कौशल सीखने में असफल हो रहे हैं। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022* के अनुसार सीखना एक सक्रिय तथा संवादात्मक प्रक्रिया है। इस स्तर पर बच्चे खेल-खेल में, अन्य बच्चों के साथ अंतर्क्रिया तथा अन्य लोगों के साथ बातचीत कर अनुभव के माध्यम से सीखते हैं।

बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 के अनुसार अधिगम खेल-आधारित तथा अनुभव-आधारित होना चाहिए। सीखने के अनुभव समावेशी वातावरण में दिए जाने चाहिए, जिससे बच्चों का भावनात्मक, सामाजिक एवं संज्ञानात्मक विकास हो सके। इस पाठ्यचर्या में बाल-केंद्रित दृष्टिकोण को अपनाने एवं अपनी कक्षाओं में शिक्षार्थियों की विविधता को पहचानने जैसी आवश्यकताओं को भी चिह्नित किया गया है। इसके साथ ही, यह रूपरेखा आयु-अनुकूल तथा रोचक अधिगम अनुभवों को डिज़ाइन करने के लिए मार्गदर्शन भी प्रदान करती है, जो बच्चों के समग्र विकास में सहायक हो।

बुनियादी स्तर की शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 में निम्न लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं—

- शिक्षा के व्यापक उद्देश्य
- विकास के कार्यक्षेत्र, जो कि भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक विज्ञान दोनों में कल्पित हैं।
- बुनियादी साक्षरता तथा संख्या ज्ञान

इस रूपरेखा के अनुसार बुनियादी स्तर की पाठ्यचर्या लचीली एवं बहुआयामी होनी चाहिए। इसे खेल तथा गतिविधि पर आधारित होना चाहिए। पाठ्यचर्या में अक्षर, भाषा, संख्या, गिनती, रंग, आकार, इनडोर एवं आउटडोर खेल, पहेलियाँ तथा तार्किक सोच, समस्या सुलझाने की कला, चित्रकला, पेंटिंग, अन्य दृश्यकला, शिल्प, नाटक, कठपुतली, संगीत तथा अन्य गतिविधियों को शामिल करते हुए अन्य कार्य, जैसे— सामाजिक कार्य, मानवीय संवेदना, अच्छा व्यवहार, शिष्टाचार, नैतिकता, व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक स्वच्छता, समूह में कार्य करना तथा आपसी सहयोग को विकसित करना भी सम्मिलित किया गया है। यह रूपरेखा पाठ्यचर्या एवं शिक्षणशास्त्र के आधारभूत सिद्धांत प्रस्तुत करती है, जिसके

आधार पर कक्षा शिक्षण किया जाना चाहिए, जो इस प्रकार है—

- एक सुरक्षित एवं प्रेरक वातावरण इस अवस्था में विकास करने तथा सीखने का आधार है।
- इस स्तर पर सीखने तथा विकास के केंद्र में खेल प्रमुख है।
- शिक्षक तथा बच्चों के बीच संबंधों का पोषण/शिक्षण का आधार है।
- इस अवस्था में शारीरिक विकास बहुत महत्वपूर्ण होता है।
- प्रत्येक बच्चा अपनी गति से सीखता है, इसलिए सीखने की आवश्यकताओं को व्यक्तिगत रूप से संबोधित किया जाना चाहिए।
- बुनियादी अवस्था में बच्चे सबसे अधिक सहज होते हैं। वे अपनी घरेलू भाषा में सहज रूप से सीखते हैं।
- सीखने के अनुभव बच्चों के पूर्व ज्ञान व समझ के आधार पर डिज़ाइन किए जाने चाहिए।
- कक्षा प्रक्रियाएँ ऐसी होनी चाहिए, जो विकास के सभी क्षेत्रों को संबोधित करती हों।

बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022 में सीखने की प्रक्रिया के पाँच चरणों को पंचादि के रूप में परिकल्पित किया गया है। शिक्षक कक्षा शिक्षण के लिए योजना बनाने में इसका उपयोग कर सकते हैं। पंचपदी, चरणों में सीखने की प्रक्रिया है जिसके पाँच चरण है— अदिति (परिचय), बोध (वैचारिक समझ), अभ्यास (अभ्यास), प्रयोग (अनुप्रयोग) एवं प्रसार (विस्तार)। बुनियादी स्तर पर पाठ्यक्रम में उन विषयों को शामिल किया जाना चाहिए जो बच्चों को उनके प्राकृतिक तथा मानवीय वातावरण से परिचित कराएँ, जिसमें वे बढ़ रहे हैं एवं विकसित हो रहे हैं, जैसे— सामाजिक तथा भौतिक दुनिया, लोग, स्थान, सजीव व निर्जीव वस्तुएँ आदि। शिक्षक को अध्ययन सामग्री को सीखने व सिखाने के लिए नवीन विधियों, जैसे— कहानी आधारित, परियोजना आधारित, थीम आधारित उपागमों का प्रयोग करना चाहिए।

बुनियादी स्तर की शिक्षा के विकास के लिए प्रयास

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए बुनियादी स्तर की शिक्षा के विकास के लिए भारत सरकार, राज्य सरकारों एवं स्थानीय स्तर पर सरकारों द्वारा कई महत्वपूर्ण प्रयास किए जा रहे हैं। इसके अंतर्गत कई योजनाएँ एवं पहलें की जा रही हैं, उनमें से कुछ प्रमुख पहलों का विवरण निम्न प्रकार है।

समग्र शिक्षा— पढ़े चलो बढ़े चलो

समग्र शिक्षा अभियान को 2018 में पूरे देश में स्कूली शिक्षा में सुधार के उद्देश्य से आरंभ किया गया था। इस अभियान का उद्देश्य विद्यालयी शिक्षा के पूर्व प्राथमिक स्तर से माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक स्तर तक सुधार करना है, ताकि सभी विद्यार्थियों को उच्च गुणवत्ता वाली विद्यालयी शिक्षा प्राप्त हो सके। यह समग्र शिक्षा योजना विद्यालयी शिक्षा के विकास की समावेशी योजना है। *समग्र शिक्षा के कार्यान्वयन की रूपरेखा 2022* के अनुसार विद्यालयी शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जो विद्यार्थियों के लिए सुरक्षित एवं न्यायसंगत हो तथा विद्यार्थियों को समावेशी परिवेश के बीच सीखने के नए अनुभव प्राप्त हो सकें। इसके साथ ही, उन्हें विद्यालय में अच्छी भौतिक

अधोसंरचना एवं अधिगम अनुकूल उपयुक्त संसाधन भी उपलब्ध हों ताकि उनका समग्र विकास सुनिश्चित किया जा सके। समग्र शिक्षा योजना राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों को उपयुक्त सहायता प्रदान करती है, जिससे वे विद्यालयी शिक्षा में पहुँच, रखरखाव एवं शैक्षिक प्रतिफलों को सुधार सकें। समग्र शिक्षा के अंतर्गत राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों को उनकी भौगोलिक एवं सामाजिक-आर्थिक संदर्भों को ध्यान में रखते हुए अधिक सहायता प्रदान की जा रही है। अब समग्र शिक्षा योजना को शिक्षा के सतत विकास लक्ष्य–4 तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार निर्मित किया गया है। समावेशी तथा समान गुणवत्ता वाली शिक्षा सभी के लिए सुनिश्चित करना इस योजना का मुख्य उद्देश्य है। समग्र शिक्षा में बुनियादी स्तर की शिक्षा में सुधार करने के लिए निम्न आयामों को शामिल किया गया है।

- अधिगम-शिक्षण तथा सीखने के लिए सहज एवं सुगम सामग्री प्रदान करना।
- शिक्षकों की दक्षता एवं कौशलों को अद्यतन करना।
- प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा पर ध्यान देना।
- बुनियादी साक्षरता तथा संख्या ज्ञान देने पर बढ़ावा देना।
- समग्र, एकीकृत, समावेशी तथा गतिविधि आधारित पाठ्यचर्या एवं शिक्षणशास्त्र पर ज़ोर देना।
- विद्यालयी शिक्षा में सामाजिक तथा जेंडर अंतराल को कम करना।
- विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों पर समानता एवं समावेशन को सुनिश्चित करना।

समुदाय की सक्रिय भागीदारी— विद्यांजलि

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रावधानों का अनुकरण करते हुए विद्यांजलि कार्यक्रम विकसित किया है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य स्कूल स्तर पर सामुदायिक तथा स्वैच्छिक भागीदारी को बढ़ावा देकर पूरे देश में विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाना है। यह एक ऐसा कार्यक्रम है जो भारत के नागरिक या अप्रवासी भारतीय या भारतीय मूल के व्यक्ति या भारत में पंजीकृत कोई संगठन या संस्था या कंपनी या समूह को सरकारी तथा सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालय में सुझाई गई विभिन्न गतिविधियों में सहभागिता कर सेवाएँ प्रदान करने तथा निःशुल्क रूप में परिसंपत्ति या सामग्री या उपकरण प्रदान करने को प्रोत्साहित करता है। इस पहल का उद्देश्य पूरे देश में सामुदायिक एवं निजी क्षेत्र के सहयोग के माध्यम से विद्यालयी शिक्षा को मज़बूत करना है। यह पहल सभी बच्चों तक समावेशी तथा समान गुणवत्ता वाली शिक्षा की पहुँच सुनिश्चित कर सके व सभी के लिए आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा दे सके। विद्यांजलि के नेतृत्व में विद्यार्थियों को शैक्षिक तथा गैर-शैक्षिक अनुभव स्वयंसेवकों के माध्यम से प्रदान किए जाएँगे। यह पहल स्वयंसेवकों, सेवानिवृत्त शिक्षक, सेवानिवृत्त सरकारी अधिकारी, सेवानिवृत्त पेशेवर महिलाओं आदि को विद्यालयों से जोड़ने का एक प्रयास है ताकि वे विद्यालय से जुड़कर अपनी सेवाएँ प्रदान कर सकें। प्रारंभिक स्तर पर तथा विशेष रूप से पूर्व प्राथमिक स्तर के लिए माता-पिता एवं समुदाय के साथ जुड़ाव की भूमिका को स्वीकार करते

हुए, यह कार्य योजना सामुदायिक स्वयंसेवकों की भागीदारी पर ज़ोर देती है।

सीखने का एक जुनून रहेगा, सीखने से न कोई दूर रहेगा— निपुण भारत

बच्चों के विकास में बुनियादी स्तर की शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका को स्वीकार करते हुए, देश में प्रत्येक बच्चे को आवश्यक रूप से बुनियादी साक्षरता तथा संख्या ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक राष्ट्रीय बुनियादी साक्षरता तथा संख्या ज्ञान मिशन-निपुण भारत (नेशनल इनिशिएटिव फ़ॉर प्रोफिशिएन्सी इन रीडिंग विद अंडरस्टैंडिंग एंड न्यूमेरेसी) वर्ष 2021 में शुरू किया गया। इस अभियान में आधारभूत भाषा तथा साक्षरता के प्रमुख घटक के रूप में मौखिक भाषा, डीकोडिंग, पठन प्रवाह, पढ़ना, समझना, लेखन जैसे मूलभूत कौशलों को शामिल किया गया है। बुनियादी संख्या ज्ञान में प्रारंभिक गणित के प्रमुख पहलुओं के अंतर्गत पूर्व-संख्या अवधारणाएँ, संख्याएँ एवं संख्याओं पर संचालन, आकार तथा स्थानिक समझ, मापन, डेटा संधारण इत्यादि कौशलों को समाहित किया गया है। इस मिशन का लक्ष्य विद्यालयी शिक्षा के बुनियादी स्तर पर बुनियादी साक्षरता तथा संख्या ज्ञान को प्राप्त करना है। यह मिशन प्रत्येक बच्चे के लिए कक्षा 3 के अंत तक बुनियादी साक्षरता तथा संख्या ज्ञान में प्रवीणता के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए राज्यों एवं संघ शासित प्रदेशों के लिए प्राथमिकताएँ तथा कार्रवाई करने योग्य एजेंडा को निर्धारित करता है। यह प्री-स्कूल से ग्रेड 3 सहित तीन से नौ वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों पर ध्यान केंद्रित करता है।

सीखने का एक नया अनुभव— जादुई पिटारा

बुनियादी स्तर पर सीखने तथा सिखाने की प्रकिया को और अधिक सहज एवं आकर्षक बनाने के लिए जादुई पिटारा विकसित किया गया है। जादुई पिटारा में कई अध्ययन सामग्रियाँ सम्मिलित हैं जिसमें विद्यार्थियों के लिए प्लेबुक, खिलौने, खेल, पहेलियाँ, कठपुतलियाँ, पोस्टर, फ्लैशकार्ड, कहानी कार्ड एवं शिक्षकों के लिए हस्तपुस्तिका को शामिल किया गया है। जादुई पिटारा खेल-खेल में सीखने के सिद्धांत पर आधारित है। यह शिक्षकों के लिए उपयोगी अधिगम-शिक्षण सामग्री के रूप में विकसित एक अनुकरणीय संग्रह है। जादुई पिटारा सीखने का एक नवीन अनुभव है जिसे तीन से आठ वर्ष के आयु के शिक्षार्थियों के लिए 13 भाषाओं में विकसित किया गया है। जादुई पिटारा को *बुनियादी स्तर की शिक्षा की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022* के आधार पर विकसित किया गया है। यह रूपरेखा बताती है कि, इस स्तर पर बच्चे कैसे खेल और गतिविधि के माध्यम से सबसे अच्छा सीखते हैं। बच्चे सामग्री, पेंटिंग, ड्राइंग, गायन, नृत्य, दौड़ने और कूदने जैसी क्रियाएँ करते समय सीखने का आनंद लेते हैं। खेल के माध्यम से सीखना *जादुई पिटारा* का आदर्श वाक्य है।

जादुई पिटारा को बाल-केंद्रित, अनुभव केंद्रित और खिलौना-आधारित सीखने के अनुभव के रूप में परिकल्पित किया गया है, जो आठ साल की उम्र तक शिक्षार्थियों के बीच वैचारिक समझ को मज़बूत करेगा। जादुई पिटारा में प्लेबुक्स, खिलौने, पहेलियाँ, पोस्टर, फ्लैशकार्ड, कार्यपत्रक आदि को स्थानीय संस्कृति की समझ के साथ दर्शाया गया है, जो कि बुनियादी अवस्था में विद्यार्थियों की

विविध आवश्यकताओं को पूरा करने तथा उनकी जिज्ञासा का समाधान करने में सहायक होगा। जादुई पिटारा में शारीरिक, सामाजिक-भावनात्मक, नैतिक, संज्ञानात्मक, भाषा तथा साक्षरता, सौंदर्य एवं सांस्कृतिक विकास के सभी आयामों को शामिल करने का प्रयास किया गया है। शिक्षक-प्रशिक्षक, माता-पिता तथा स्कूल खेल-खिलौने, पोस्टर, कठपुतलियों, स्थानीय संवाद वाली गतिविधि पुस्तकों, कविताओं, कहानी एवं कार्डों को इकट्ठा करके अपना स्वयं का जादुई पिटारा बना सकते हैं। जादुई पिटारा को डिजिटल रूप में भी विकसित किया गया है। यह दीक्षा पोर्टल *https://diksha.gov.in/jadoo/index.html* पर उपलब्ध है।

बुनियादी स्तर की शिक्षा के विकास के लिए सुझाव

- प्रायः विद्यालय का वातावरण घर के वातावरण से बिल्कुल अलग होता है। विद्यालय में स्वतंत्रता का अभाव होने पर बच्चे खुद को असहज महसूस करते हैं तथा उनका मन पढ़ाई में नहीं लगता है। विद्यार्थियों के उचित अधिगम के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षक कक्षा में घरेलू एवं उन्मुक्त वातावरण बनाने का प्रयास करें।
- ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालय में बच्चों को सीखने की आवश्यक वस्तुएँ, जैसे— खिलौने, प्ले कार्ड्स, पोस्टर, खेल के उपकरण पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं होते हैं। ऐसी स्थिति में बच्चों का सीखना रुचिकर नहीं होता है तथा उनका मन अधिगम से विमुख हो जाता है। इसलिए अधिगम अनुभवों एवं शिक्षणशास्त्र के संगठन में खेल को अधिक से अधिक सम्मिलित किया जाना चाहिए। साथ ही, पूर्व-प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों के प्रभावी ढंग से सिखाने के लिए संसाधनों का प्रबंधन किया जाना आवश्यक है।
- शिक्षकों को विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करते हुए उन्हें अभिप्रेरित करने का प्रयास करना चाहिए। अतः शिक्षकों को विद्यार्थियों में रुचि एवं जिज्ञासा उत्पन्न करते हुए उनके पूर्वज्ञान से नवीन ज्ञान को जोड़ते हुए उन्हें सीखना चाहिए।
- बुनियादी स्तर की शिक्षा के दौरान बच्चे छोटे अर्थात तीन से आठ वर्ष के होते हैं। उन्हें दूसरे बच्चों के साथ समय व्यतीत करना पसंद होता है। उनकी इस विशेषता का उपयोग करते हुए अधिगम-शिक्षण को प्रोत्साहित किया जा सकता है, जिससे वे एक-दूसरे के साथ समूह में मिल-जुलकर सीख सकें।
- बुनियादी स्तर की शिक्षा के विकास के जो भी प्रयास सरकार द्वारा किए जा रहे हैं, उनको ज़मीनी स्तर पर लागू करने के लिए सबसे ज़रूरी है कि सभी संस्थाएँ, विद्यालय, शिक्षक, प्राचार्य, अभिभावक एवं समुदाय मिलकर अपना काम पूरी ईमानदारी एवं लगन से करें।
- विद्यालयों में प्रशिक्षित कुशल एवं दक्ष शिक्षकों की कमी को शीघ्र पूरा किया जाए।
- विद्यालय प्रशासन के द्वारा स्थानीय समुदाय से हर संभव मदद लेने का प्रयास किया जाए।
- बुनियादी स्तर की शिक्षा के अंतर्गत पाठ्यक्रम में बोलने, सुनने, पढ़ने तथा लिखने जैसी बुनियादी क्रियाओं एवं कौशलों पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए।
- विद्यालय में अधिगम-शिक्षण के दौरान प्रायः लिखने पर अधिक बल दिया जाता है। शिक्षकों

को अधिगम-शिक्षण अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए विद्यार्थियों को बोलने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि उनमें संप्रेषण कौशलों का विकास हो सके।

- शिक्षकों को बुनियादी स्तर की शिक्षा में अभिभावकों को शामिल करते हुए बच्चों की शिक्षा को सहज एवं सुगम बनाना चाहिए।

निष्कर्ष

बुनियादी स्तर की शिक्षा, शिक्षा का सबसे मौलिक एवं बुनियादी स्तर होता है। इस स्तर की शिक्षा द्वारा बच्चों को नैतिक मूल्यों, आधारभूत भाषा एवं गणित, सामाजिक और वैज्ञानिक अध्ययन जैसी मूल जानकारी प्राप्त होती है। आधुनिक युग की नींव तैयार करने में बुनियादी स्तर की शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है। क्योंकि यह शिक्षा जहाँ व्यक्ति को स्वावलंबी बनाती है, वहीं समाज को भी स्वावलंबी बनाती है। यदि विद्यार्थियों को इस प्रकार की बुनियादी शिक्षा के आधार पर शिक्षित किया जाए, तो भावी पीढ़ी अपेक्षाकृत अधिक मज़बूत होगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा के विकास की एक नई उम्मीद है। यह बुनियादी स्तर की शिक्षा के विकास के लिए नए आयाम खोलती है। इस नीति का उद्देश्य भारत को ज्ञान की महाशक्ति बनाना है, परंतु यह स्वप्न तभी साकार होगा जब सभी विद्यार्थियों को बुनियादी स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जाए। इस कार्य को संस्थाओं, विद्यालय, शिक्षक, प्राचार्य, प्रशासन, विद्यार्थी, अभिभावक एवं समुदाय आदि को मिलकर करना होगा ताकि बुनियादी स्तर की शिक्षा को सुगम एवं सहज रूप से क्रियान्वित किया जा सके।

संदर्भ

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार, नई दिल्ली. 1 जनवरी, 2023 को https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0.pdf से प्राप्त किया गया।

शिक्षा मंत्रालय. *समग्र शिक्षा अभियान. 2021*. भारत सरकार, नई दिल्ली. 10 मार्च, 2023 को https://www.enterhindi.com/samagra-shiksha-abhiyan-portalmhrd/ से प्राप्त किया गया।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. *फ़ाउंडेशनल लर्निंग स्टडी 2022— नेशनल रिपोर्ट ऑन बेंचमार्किंग फ़ॉर ओरल रीडिंग फ्लूअन्सी विद रीडिंग कॉम्प्रीहेंशन एंड न्यूमेरेसी*. नई दिल्ली. 10 जनवरी, 2023 को https://nipunbharat.education.gov.in/fls/file/Benchmarking_for_ORF_and_Numeracy.pdf से प्राप्त किया गया।

——. *जादुई पिटारा 2023*. 5 फरवरी, 2023 को https://diksha.gov.in/jadoo/explore.html से प्राप्त किया गया।

स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग. 2021 *विद्यांजलि स्कूल शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने हेतु समुदाय तथा स्वैच्छिक भागीदारी को बढ़ावा देने संबंधी दिशा-निर्देश*. नई दिल्ली. 12 जनवरी, 2023 को https://vidyanjali.education.gov.in/assets/pdf/Guidelines_Vidyanjali_Hindi.pdf से प्राप्त किया गया।

शिक्षा मंत्रालय. स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग. 2021 *निपुण भारत 2021— दिशा-निर्देश*. नई दिल्ली. 15 जनवरी, 2023 को https://diksha.gov.in/play/collection/do_3134178342566871041739 से प्राप्त किया गया।